जैनाचार्यों परम्परा में हेमचन्द्र का योगदान एक विश्लेषणत्मक अध्ययन

डॉ० हरेन्द्र कुमार,
(सहायक प्रोफेसर), ए.बी. यादव कॉलेज,
बोधगया, बिहार (इंडिया) 824231।

सारांश–

भारत बहुविविधता तथा अनेकता में एकता वाले राष्ट्र के रूप में आदिकाल से ही जाना जाता है। भारत अनेकों धर्म एवं सम्प्रदायों की संगम स्थली रही है, क्योंकि इसे समय–समय पर बहुत सारे महाज्ञानियों के कारण स्थान प्राप्त होते रहा है। संस्कृत साहित्य और विक्रमादित्य के इतिहास में जो स्थान कालिदास का हर्ष के दरबार में बाणभट्ट का है। प्रायः वही स्थान ई०सं० की बारहवीं सदी के चौलुक्य वंशी सुप्रसिद्ध गुर्जर नरेन्द्र शिरोमणि सिंहराज जयसिंह के इतिहस में हेमचन्द्र का है। भारत के प्राचीन विद्वानों में जैन श्वेताभ्यसराचार्य श्री हर्षचन्द्र सूरि का अत्यंत उच्च स्थान है। उसी प्रकार जयसिंह के इतिहस में हेमचन्द्र का स्थान प्राप्त होता है। उन्होंने धर्म दर्शन, व्याकरण साहित्य तथा सभी प्रकार के साहित्यिक विद्याओं से परिपूर्ण रहे हैं। आचार्य हेमचन्द्र की विद्वता उनके युग जैनी परम्परा के महानायक के रूप में जाना जाता है।

i प्रस्तावना–

आचार्य हेमचन्द्र का जैन धर्म में महान स्थान है। जीतने भी आचार्य हुए उसमें हेमचन्द्र का स्थान सबसे ऊपर रहा। धर्मदर्शन व्याकरण साहित्य आदि विद्याओं में अनेको सुविख्यात आचार्य हो चुके हैं। इन आचार्यों में आचार्य हेमचन्द्र की ख्याति तो कलिकाल सर्वज्ञ के रूप में स्वीकृत है। प्रथम सूत्रकार आचार्य उमास्वति है। दिगम्बर सम्प्रदाय इन्हें अपनी शाखा के मानते हैं। व्याख्यकार या भाष्यकार के रूप में जैन परम्परा के दो गंध प्रसिद्ध है। ब्राह्मण जाति में आचार्य हरिभद्र का जन्म हुआ। विद्याधर गच्छ के शिष्य थे। आचार्य हेमचन्द्र के समकालीन मलयगिरि को अध्ययन मार्ग प्रशस्त किया है। देवनन्दी को ही हम पूज्यवाद के रूप में जानते हैं। सातवीं–आठवीं आचार्य के रूमें भट्ट को जाना जाता है। आचार्य विद्यानन्द की नवीं–दसवीं शताब्दी के आचार्य है और वीरसेन भी 8वीं 9वीं शताब्दी के विद्वान है। दक्षिणी भारत आचार्य के रूप में कुन्द कुन्द को जाना जाता है। आचार्य यतिकृष्भ, करणानुयोग सम्बन्धी साहित्य निर्माताओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

कुन्द कुन्द के पश्चात् बटूकेर भाववा उचित है। शिवार्य ने भगवती अराधना नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की।

स्वामी कार्तिकेय के संबंध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। कुमारावस्था में मुनिदीक्षा धारण की थी। **नेमिचन्द्र** अत्यंत प्रभावशाली सिद्धान्त शास्त्र मर्मज्ञ विद्वान थे। इन सभी आचार्य में हेमचन्द्र शास्त्र मर्मज्ञ विद्वान थे। इन सभी आचार्य में हेमचन्द्र का स्थान सबसे ऊपर है

ii विश्लेषणात्मक अध्ययन–

जैन परम्परा के प्रमुख आचार्यों का हम सामान्य परिचय दे चुके हैं। आचार्य हेमचन्द्र बारहवीं शताब्दी में गुजरात के सामाजिक सांस्कृति और राजनीतिक इतिहास की विधायक कड़ी है। आचार्य हेमचन्द्र धार्मिक रूढ़ियों अंधविश्वासों आयार कीर्ति का कैलाश एवं धर्म त्रिवेणी संगम बन गया था। कार्तिक पूर्णिमा के दिन आचार्य हेमचन्द्र का जन्म गुजरात में हुआ था। यह मोढ़वंशी वैश्य थे। इनके पिता का नाम चाचिग और माता क नाम पाहिणी देवी था। माता तथा मामा जैन धर्माम्वलम्बी थे, किन्तु पिता शैव धर्म का मानते थे। उनका शिक्षा आचार्य देवचन्द्र ने दिया था। जैन परम्परा के उनका शिक्षा सम्पन्न हुआ है। इक्कीस वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने समस्त शास्त्रों का अध्ययन पूरा कर लिया था। हमे के सम्पन्न कान्ति और चन्द्र के समान आह्लादिकता इनके होने के कारण चाड़गदेव सोमचन्द्र हेमचन्द्र चार्य हो गये। सिंहराज से हेमचन्द्र मिलन हुआ। उसे मिलकर बहुत अधिक प्रभावित हुए। सिंहराज जयसिंह के नाम को अपने नाम के साथ जोड़कर सिंहहेम शब्दानुशासन नामक अपना नवीन व्याकरण की रचना की। कुमारपाल का राज्यभिषिक्त 1194 में हुआ। वह सिहराज के उत्तराधिकारी कुमारपाल को बैठा दिया। कुमारपाल का संबंध आचार्य हेमचंद्र गुरु शिष्य का था। कुमारपाल के जैन धर्म के आचार्य से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। आचार्य हेमचन्द्र की रचनाओं की संख्या कथित तौर पर तीन करोड़ बतायी जाती है। इनकी कृतियाँ देखने से स्पष्ट हो जाता है कि ये अपने समय के अद्वितीय आचार्य थे। बहुमुखी व्यक्तित्व वाला आचार्य हेमचन्द्र थे। वे एक ही साथ महान संत शास्त्रीय विद्वान अद्वितीय वैयाकरण, दार्शनिक, काव्यकार, योग्य लेखक और चरित्र के अमिट सुधारक थे। जैनाचार्यों की परम्परा में आचार्य हेमचन्द्र के हम उच्चासनस्थ एवं सुप्रतिष्ठित प्रतिभा सम्पन्न पाते हैं। आचार्य में हेमचन्द्र का व्यक्तित्व सबसे ऊपर का स्थान रखता है।

iii निष्कर्ष

आचार्य हेमचन्द्र कालीन सामाजिक व्यवस्था का विस्तृत विवेचन किया है। जैन धर्म का प्राचीन इतिहास इसके 24 तीर्थकरों के अनुकरणीय चरित्र और परिश्रम का इतिहास रहा है। अन्य प्रदेशों के अपेक्षा गुजरात राजस्थान अविभाति मध्यप्रदेश में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। खास कर गुजरात में जैन धर्म का अधिक प्रचलन था। बारहवीं शताब्दी के चालुक्य राजा कुमारपाल और धर्मगुरु आचार्य हेमचन्द्र के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दृष्टि टिक जाती है। आचार्य हेमचन्द्र और राजा कुमारपाल के सम्मिलित प्रयत्न का सुखद परिणाम था। जैन धर्म के हेमचन्द्र राजा कुमारपाल के गकुरु बनने के पहले जैन धर्म की शिक्षा लिया था। आचार्य हेमचन्द्र के विशाल व्यक्तित्व का प्रभाव था कि कुमारपाल को जैन धर्म की दीक्षा देने के लिए मानसिक तौर पर दिया। दीक्षित होने के बाद कुमारपाल समाज में क्रांति ला दिया। गुजरात प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक दृष्टि से अग्रगाम रहा है। गुजरात में जैन धर्म काफी लोकप्रिय रहा है। अचार्य हेमचन्द्र के महान् व्यक्तित्व के समक्ष कुमारपाल तो नतमस्तस्क हुआ करते थे। आचार्य हेमचन्द्र तत्कालीन गुजराज के प्रतिष्ठित धर्मगुरु हो गये थे। आचार्य हेमचन्द्र के विशाल व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि तत्कालीन गुजरात में धर्माचार्यों के विशिष्ठ स्थान एवं सम्मान प्राप्त था। धर्माचार्यों की स्तुति में उन्हें देवेन्द्र से श्रेष्ठ कहा गया है। आचार्य हेमचन्द्र का व्यक्तित्व से गुजरात अधिक प्रभावित है।

iv संदर्भ

1. 40 सुखलाल संधवी, तत्वार्थ सूत्र का विवेचन, पृ० 1–28
2. 40 संधवी, त्तत्वा० विवेचन पृ० 29
3. तत्त्वार्थ विवेचन पृ० 36
4. तत्त्वार्थ विवेचन पृ० 38
5. 40 संधवी तत्त्वा० पृ० 38
6. 40 संधवी तत्त्वा० पृ० 40
7. 40 संधवी पृ० 41
8. 40 संधवी पृ० 41
9. डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, प्रा०भा० साहित्य का इतिहास –पृ० 216
10. डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, प्रा०भा० साहित्य का इतिहास –पृ० 221
11. डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, प्रा०भा० साहित्य का इतिहास –पृ० 228
12. डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, प्रा०भा० साहित्य का इतिहास –पृ० 232
13. डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, प्रा०भा० साहित्य का इतिहास –पृ० 233
14. डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, प्रा०भा० साहित्य का इतिहास –पृ० 235
15. डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन पृ० 8–16